

निर्विकल्पे समधौ Spr. (II) 77. प्रमाणक्राटिम् *gelangen zu, erreichen* SARVADARJANAS. 128, 8, 9. प्रविशेश्व स्वानि गात्राणि लज्जया *schrumpfte zusammen* R. 2, 98, 19. प्रविशतीमिवाङ्गानि KATHAS. 18, 175. Ohne Ergänzung eintreten (in ein Haus u. s. w.) ÂCV. GRHJ. 4, 4, 11. MBH. 3, 2145. 3032. HARIV. 8341. निर्गच्छत्प्रविशेच्छापि KÂM. NĪTIS. 7, 47. 14, 40. ÇÂK. 7, 11. KATHAS. 18, 211. RÂGA-TAR. 3, 358. Im Drama stehender Ausdruck für das Auftreten auf der Bühne. — 2) sich geschlechtlich vermischen (von beiden Geschlechtern): स्तुनाकाले मनस्विनी । पत्नी दुपदराजस्य दुपदं प्रविशेश्व कृ MBH. 3, 7397. यो वा जननीं प्रविशेश्वरः im Traume Suçr. 4, 110, 9. — 3) an Etwas gehen, obliegen, sich einer Sache hingeben: दीनो प्रविश R. 1, 31, 28. fg. (32, 22 GORR.). MBH. 14, 2850. वयं दीनो प्रवेक्ष्यामः संवत्सरगणान्ब्रून् HARIV. 300. — 4) in Jmd hineingehen so v. a. in ihm aufgehen, gegen ihn verschwinden, vor ihm ganz in den Schatten treten: तं (अर्जुनं) प्रवेक्ष्यति वै सर्वे राजानः शस्त्रयोधिनः HARIV. 4039. — 5) partic. प्रविष्ट a) in act. Bed. a) eingegangen, eingetreten, sich begeben habend unter, eingedrungen: निवेशनम्, गृहम् MBH. 3, 2184. R. 2, 42, 20. ÇÂK. 34, 13. KATHAS. 18, 262. BHÂG. P. 1, 11, 29. PAÑKÂT. 62, 24. गृहे KATHAS. 13, 32. पुरीम् R. 1, 17, 34. दुर्गम् PAÑKÂT. 37, 11. किङ्गम् 21, 14. विवरम् HIT. 17, 4, 23, 16. कटकम् 44, 3. वनम् BHÂG. P. 3, 1, 1. दण्डको R. 3, 32, 47. आश्रमम् ÇÂK. 31, 12. अप्सु RV. 10, 31, 3. 7, 49, 1. जलम् HIT. 38, 10. जीवलोकम् 17, 19. ऋषिषु RV. 10, 71, 3. महासार्धे MBH. 3, 2535. fg. स्नेहप्रायोजनपदान् — सौगताः PRAB. 87, 19. इह ÇAT. BR. 14, 4, 2, 16. तत्र R. 2, 21, 17. पुरुषे ऽतः ÇAT. BR. 1, 1, 2, 2. तस्मिन्वाक् 4, 14. प्रविष्टः सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः Spr. 1869. यथा महाति भूतानि भूतपञ्चावेषु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि BHÂG. P. 2, 9, 34. 7, 12, 15. पश्चार्धेन प्रविष्टः भूयात् पूर्वकायम् ÇÂK. 7. मध्ये तमः प्रविष्टम् so v. a. der finstere Theil befindet sich in der Mitte VARÂH. BRH. S. 3, 51. क्वापिमादृशतलं प्रविष्टाम् RAGH. 16, 6. शेषेन्द्रियवृत्तिरातो सर्वात्मना चतुरिव प्रविष्टा 7, 12. लोलं मनः प्रविष्टाम् KUMÂRAS. 3, 7. तिले च तैले च रुचिः प्रविष्टा घृते च दुग्धे च बलं प्रविष्टम् । स्त्रीणां वराङ्गेषु रतिः प्रविष्टा सर्वे पदा (= पदानि) कृत्तिपदे प्रविष्टाः (so v. a. verschwinden in) || Spr. (II) 2563. हृदि प्रविष्टया तत्प्रत्यागमवाङ्मया KATHAS. 18, 230. एवं मध्यप्रविष्टेन मूर्ध्निः प्राप्तेन वक्ष्यते so v. a. der sein Vertrauen gewonnen hat 62, 162. वायुं eingegangen in KAUSH. UP. 2, 14. राज्ञे so v. a. die Herrschaft angetreten habend BHÂG. P. 9, 18, 2. वामुदेवप्रविष्टधी so v. a. versenkt in 3, 33, 29. प्रविष्टाः स्मः पारमेस्वरं सिद्धातम् so v. a. eingeführt —, eingeweiht in PRAB. 37, 14. कर्मोदये बुद्धिमतिप्रविष्टाम् MBH. 3, 12735. विडुषो मते so v. a. übereinstimmend mit 12, 6677. Ohne Ergänzung eingetreten (sc. in's Haus u. s. w.) von Personen 3, 2158. 4, 1000. KATHAS. 18, 83. 193. 32, 32. RÂGA-TAR. 3, 58. aufgetreten (auf der Bühne) VIKR. 71, 11. कालपाश so v. a. durchgezogen RÂGA-TAR. 3, 13. अम्बु eingedrungen 271. तमम् BHÂG. P. 3, 17, 6. पादानिन्दोः — ज्ञातमार्गप्रविष्टान् MEGH. 90. उन्नम्य नयनं यदतिप्रविष्टम् zu tief eingesunken Suçr. 2, 338, 17. प्रविष्टे कलौ so v. a. eingetreten, angebrochen Vet. in LA. (III) 30, 10. — ß) der an Etwas gegangen ist, sich an Etwas gemacht hat, beschäftigt mit: नवकर्मणि RÂGA-TAR. 4, 58. — b) in pass. Bed. a) worin man eingetreten ist, betreten: प्रविष्टे ते मया वक्तुम् R. 5, 36, 28. अत्रप्रविष्टविषयस्य — अतकस्य RAGH. 11, 18. — ß) benutzt, womit man Geschäfte macht JÂGÂN. 2, 64. राज्ञो कृपा-

VI. Theil.

वित्तिर्यत्प्रविष्टैः पुष्पते धनम् RÂGA-TAR. 4, 684. — Vgl. प्रवेश u. s. w. — caus. 1) hereintreten lassen, an einen Ort bringen, niederlegen, hineinwerfen u. s. w. AV. 9, 5, 23. अग्नौ कामान् TBa. 3, 7, 1. अप्सु TS. 3, 4, 2, 8. 5, 2, 2, 4. तमसि ÇAT. BR. 1, 9, 2, 35. पत्नीः सदः KÂT. ÇR. 6, 3, 16. प्रवेक्ष्यमानं राजानम् (Soma) LÂTJ. 5, 6, 1. 1, 9, 8. गृहम्, निवेशनम्, वेष्टम्. आगारम् ÂCV. GRHJ. 1, 8, 8. MBH. 2, 2614. 3, 1789. R. 1, 68, 2. Suçr. 4, 18, 1. KATHAS. 4, 51. शुद्धातम् ÇÂK. 71, 13. यमसदने (सदनम् ed. Bomb.) MBH. 7, 66. गेहे KATHAS. 4, 64. BHÂG. P. 3, 1, 6. गृहम् BHATT. 7, 23. पुरम् MBH. 1, 4427. R. 1, 10, 34. RAGH. 3, 62. पुरे HARIV. 3187. मठातः KATHAS. 18, 112. अतःपुरात्तरम् 185. गृहमध्ये PAÑKÂT. 237, 12. सरसि 236, 1. तेषु देशेषु MBH. 12, 2631. अप्सु शिलां बद्धा JÂGÂN. 2, 278. मृत्युवक्तुम् RÂGA-TAR. 4, 293. द्वारवतीं पारिजातं वरदुमम् HARIV. 7664 (med.). यष्टिं पुरं पौरैः (bringen lassen) VARÂH. BRH. S. 43, 24. अप्सु दण्डम् M. 9, 244. सपन्नशर्मस्य शरीरे P. 5, 4, 61. Sohol. पतंगिकानां पुच्छेषु त्वेषीका प्रवेक्षिता MBH. 1, 4332. तस्य पदौ च पाणी च शिरो ग्रीवा च सर्वशः । काये प्रवेशयामास पशोरिव पिनाकधृक् ॥ 4, 779. बृहद्वनस्तां सत्रपां प्रवेशयन्निव RÂGA-TAR. 4, 435. अर्थ (निधेः) कोशे M. 8, 38. प्रवेशितश्च तैः सर्पैः स क्लृप्तो भोगबन्धनम् HARIV. 3664. रामेषुभिर्दर्धनिद्रां प्रवेशितः versetzt in RAGH. 12, 81. प्रवेशय मां पारमेस्वरीं दीक्षाम् einführen —, einweihen in PRAB. 37, 15. एतस्मिन्गुणं को हि प्रवेशयेत् so v. a. beibringen KATHAS. 40, 11. Ohne Angabe des Ortes Jmd hineinführen (in's Haus u. s. w.) MBH. 3, 2954. 2956. R. GORR. 1, 75, 11. 6, 7, 42. KÂM. NĪTIS. 14, 38 (मृगजातीः vorführen). KATHAS. 12, 68. RÂGA-TAR. 3, 205. 4, 560. 6, 324. 329. 336. PAÑKÂT. 16, 2. प्रवेशयतामेष समीपमानु मे MBH. 4, 314. hereinführen auf die Bühne, auftreten lassen: यत्र पात्रं नैव प्रवेश्यते BHAR. beim Schol. zu ÇÂK. 8, 20. प्रतिपुरुषम् MÂRÊH. 48, 14. प्रवेशय तौ ÇÂK. 27, 14. 29, 14. 61, 12. MÂLAY. 10, 20. 63, 16. 18. DHÛRTAS. 89, 7. प्रवेशित in seine Würde —, in sein Amt eingesetzt BHÂG. P. 5, 24, 18. — 2) in sein Haus führen so v. a. heirathen (vom Manne) MBH. 3, 5983. — 3) verausgaben: प्रभूतो ऽपि संचितो ऽर्थः प्रवेशयमानो ऽञ्जनमिव क्षीयते PAÑKÂT. ed. orn. 3, 13. — 4) = simpl. hineintreten, hineingehen: तल्लोकपद्मे स उ एष विष्णुः प्रावीविशत् BHÂG. P. 3, 8, 15. यष्टिं प्रवेशयतीम् (v. l. प्रविश्यमानाम्, प्रविशतीं भुवि) so v. a. in die Stadt gebracht werdend VARÂH. BRH. S. 43, 28. — Vgl. प्रवेशन, प्रवेशयितव्य, प्रवेश्य. — desid. प्रविविक्तति hineinzugehen —, einzudringen beabsichtigen: शैलान् MBH. 3, 10836. सेनाम् 7, 4359. mit Ergänzung von सेनाम् 6, 139 = 12, 3767 (in der Calc. Ausg. falschlich विवक्ततः). ऊताशनम् R. GORR. 2, 18, 17. — Vgl. प्रविवित्तु.

— अन्तुप्र 1) eingehen, eintreten, eindringen, fahren in, sich begeben unter: त्रपाणि ÇAT. BR. 6, 1, 2, 19. 2, 4, 1. लोकान् 9, 1, 4, 6. विद्युद्विद्युत्प वृष्टिमनुप्रविशति wird zu Regen AIT. BR. 8, 28. TS. 5, 2, 9, 7. 3, 2, 1. अयं पुरीष्याः प्रविष्टाः पृथिवीमनु 2, 5. TAITT. UP. 2, 6. KAUSH. UP. 4, 20. सो ऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टः KATHOP. 1, 29. — गृहं गृहम् KATHAS. 86, 93. DAÇAK. 71, 5. PAÑKÂT. ed. orn. I, 89. तान्वाणाः MBH. 3, 12178. बाष्पैर्महारथानीकम् 9, 1337. स्नेहस्त्वगादीन् Suçr. 4, 36, 20. यतो न वेदा मनसा सैन्यमनुप्रविशति MBH. 3, 1622. HARIV. 3140. अप्सु ÇÂK. zu BRH. ÂR. UP. S. 30. प्राणिजातम् 298. BHÂG. P. 3, 7, 21. देवम् MUIR, ST. 4, 300, 24. वज्रं (nom.) दण्डकाष्ठम् (acc.) MBH. 1, 795. ज्ञातम् fahren in MÂRÊH. P. 31, 106. KATHAS. 62, 162. 121, 195. PAÑKÂT. ed. orn. 37, 8. यस्या यस्यास्तु यो भा-